।। अजर लोक ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ अजर लोक ग्रंथ लिखंते ||

|| चोपाई ||

अजर लोक सूं म्हे चल आया || बिप्र के घर जामा पाया ||
बिप्र किसब करूँ नही कोई || आ बिध जाण लखे नर मोई ||१||

सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । कि मैं अजर लोक से चलकर आया हूँ । और मुझे ब्राम्हण के घर जन्म मिला है । परन्तु मैं ब्राम्हण का कोई भी कर्म नही करता हूँ । यही विधी जानकर मुझे पहचानो । ||१||

परात्परी से दो लोक है

१) अजरलोक और २) होनकाल पारब्रम्ह लोक

होनकाल पारब्रम्ह के लोक में निराकार के पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह,चिदानंद ब्रम्ह के १३ लोक है । (महामाया,प्रकृती,ज्योती.....।)

पारब्रम्ह और साकारके त्रिगुणी मायाके मृत्युलोक, पाताललोक, स्वर्गलोक, वैकुंठ, कैलास, सतलोक ,शक्तीलोक,नरकलोक ७ स्वर्ग के भवन और ७ पाताल के भवन इतने लोक है । लोक किसे कहते ? हंसोकी बस्ती जहाँ है या हो सकती उसे लोक कहते ।

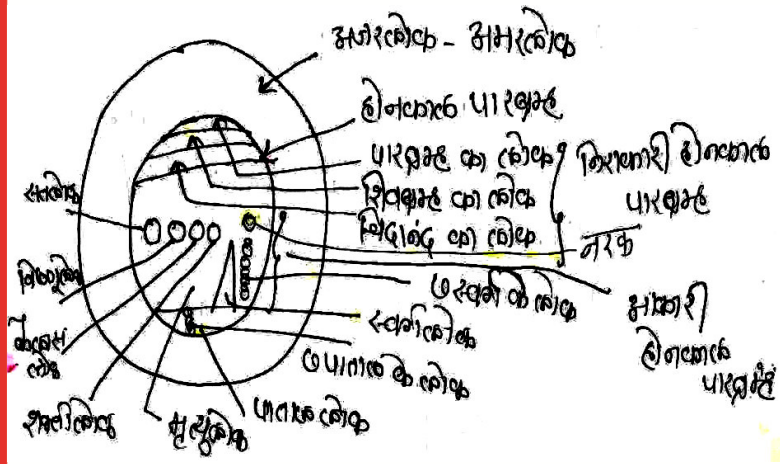

इसप्रकार हंसोके बस्तीके अजरलोक–१

२)होनकाल पारब्रम्ह के–निराकारीके १३ लोक–आकारीके–३ लोक १४ भुवन और ४ पुरी=२१

ऐसे होनकाल पारब्रम्हके कुल ३४लोक है।

ऐसे सभी कुल मिलाके ३४ लोक है ।(अजरलोक १+होनकाल पारब्रम्ह के ३४) =३५ आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगतके नर–नारीयोंको और ज्ञानी,ध्यानीयोंको कह रहे है की,मै अजरलोक से मृत्युलोक में आया हूँ और बिप्र के घर शरीर पाया हूँ ।(जन्मा नही जन्मे हुये शरीर में प्रगट हुवा हुँ)। ऐसे बिप्र के घर में शरीर पाने के बाद भी बिप्र किसब एक भी करता नही । बिप्र किसब याने ब्राम्हीण किसब याने ब्रम्हा के चारो वेदो के करणीयोके किसब याने त्रिगुणी माया के किसब मतलब ही होनकाल पारब्रम्ह के किसब ये एक भी नही करता । और होनकाल पारब्रम्ह के परे का अजरलोक का ध्यान करता यह भेद जानकर जो मुझे समझेगा वह होनकाल पारब्रम्ह के आवागमन के दु:ख से निकलकर सदा के लिये महासुख के अजरलोक में पहुँचेगा ।||१||

बिपर किसब सबे छिटकाया || राम नाम हिर्दे लिव लाया ||

देस देस का हंसा आवे ।। न्यारी भाषा के बेण सुणावे ।।२।।

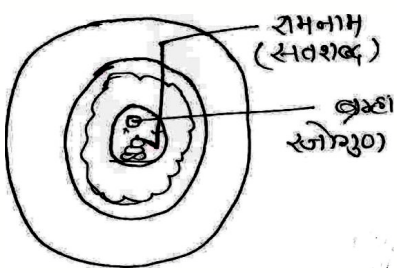

मैने ब्राम्हीण घर में जामा पाने के पश्चात भी चारो वेदो के सभी कर्मकांड त्याग दिये । और रामनाम याने सतशब्दसे मैने मेरे हंसके हृदयसे याने निजमन से लिव लगाई । जैसे मै अजरदेश से आया वैसे होनकाल पारब्रम्ह के अन्य ३५ देशो से हंस मृत्युलोक में आते और वे जिस देश से मृत्युलोक में आये उस देश की जो भाषा रहती वे शब्द जगत के लोगों को सुनाते ।।।२।।

बिप्र किसब बेद अे चारी ।। तिण मे बंधिया जुग सेंसारी ।।
पिंडत भूला ओर भुलाया ।। दिसा भूल पे बाळक आया ।।३।।

इसीप्रकार बिप्र यह ब्रम्हाके सतलोकसे मृत्युलोकमें आये । इसलिये बिप्र किसब याने ब्राम्हणो- का किसब यह चार वेदोके क्रिया-करणीयाँ है। इन चार वेदोके क्रिया-करणीयाँमें सभी जगत अटक गया । इन चार वेदो के क्रिया-करणीयों में बिप्र याने पंडीत भूल गया और पंडीत खुद बेदो के भूल में भटकनेसे उसने अपने साथ साथ सभी जगत के लोगो को भी वेदो में भूला दिया याने भटका दिया । जिसप्रकार मेले में बालक आता और मेले के भूल भूलैया में घर का रास्ता भूल जाता और अपने साथवाले बाल साथीयो को भी अपने साथ भटका देता । ऐसाही पंडीतों का जगत में है । इन पंडीतोको खुद को अजरलोक का रास्ता भूल जानेसे जगतके लोगोको भी इन्होंने अजरलोक का रास्ता भूला दिया और त्रिगुणीमाया के लोको में भटका दिया ।।।३।।

च्यारूँ बेद त्रिगुणी माया ।। तिण मे सब ले जक्त बंधाया ।।
उपजे खपे पार नही पावे ।। संकट जूण जन्मे जन्मावे ।।४।।

त्रिगुणी माया याने रजोगुण,सतोगुण और तमोगुण ऐसे तीन गुणों की है । इस त्रिगुणीमाया

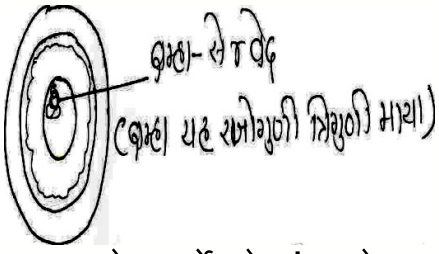

का रजोगुण साकारी रुप याने ब्रम्हा है । इस ब्रम्हाने चारो वेद लिखे है इसलिये चार वेद यह रजोगुण त्रिगुणीमाया है । ऐसे रजोगुणके सुख में ब्रम्हा ने चारो वेद के सब जगतके जीवोंको अटका दिया और जीव उन सुखोंके चलते त्रिगुणी माया के कर्मो के बंधनमे अटक गये । त्रिगुणी माया के कर्म जालमें अटकने से होनकाल के हाथो पार नही आता इतने बार बार उपजने लगे और खपने लगे । इसप्रकार जीव ३ लोक के अनेक कष्ट के योनी में जन्मने और मरने लगे ।।।४।।

तीन लोक का फेरा होई ।। घाणी बेल फिरे ज्यूं सोई ।।
चार बेद अे त्रीगुण माया ।। लख चोरासी जीव बंधाया ।।५।।

जीव ४ वेद ये रजोगुणी त्रिगुणीमायामें अटक जानेसे जीव के पिछे त्रिगुणी मायाका ३ लोको में फिरनेका फेरा लग गया और जीव संकट के ४३२०००० साल के ८४००००० राम

प्रकार के अलग अलग योनी में जनमने लगा और खपने लगा ।।।५।।

तीन लोक घाणी ज्यूँ फेरो ।। उदे अस्त ज्यूं होय नवेरो ।।
सब दिन दोड़ पेडँ नही जावे ।। ज्याँ जूते ज्याँ ही छिटकावे ।।६।।

त्रिगुणीमाया का ३ लोक का फेरा यह घाणी के फेरे समान है । जैसे घाणी का बेल घाणी के साथ सूरज उदय होने से सूरज अस्त होवे तबतक दौड्ते फिरते ही रहता। इतना पूरा दिन फिरने पर भी घाणी का बेल खिल से जितने अंतर पे जूता उतने ही अंतर पे छूटता। उस खिल के अंतर से एक पग भी आगे से नही जाता। इसीप्रकार त्रिगुणीमाया के फेरे में अटका हुवा जीव ३ लोक के फेरे के साथ कष्ट का ८४००००० योनी का ४३२०००० साल का कष्ट जुनो का फेरा करने पे भी अजरलोक की ओर जरासा भी नही सरकता । ।।६।।

बाहेर क्रिया ब्हो बिध कर हे ।। ज्याँ उपजे ताँही फिर खप हे ।।
तीनो लोक मे त्रिगुण माया ।। ब्रम्ह धाम चोथे पद पाया ।।७।।

जीव त्रिगुणीमाया की क्रिया-करणी नाना विधीसे करता और त्रिगुणीमाया के ३ लोक के मृत्युलोक में जैसे उपजता वैसेही मृत्युपश्चात त्रिगुणीमाया के अन्य ३ लोक में उपजता और दु:ख भोगते हुये खपता । जीव त्रिगुणीमाया के ३ लोक के परे के आनंदब्रम्ह के लोक में कभी नही पहुँचता । यह सतस्वरुप ब्रम्हका सुख का लोक त्रिगुणीमायाके परेका चौथा लोक है ।७।

त्रीगुण माँय लेस नही आवे ।। ब्रम्ह धाम केसी बिध जावे ।।
पूर्ब जाय पिछम कूं जोवे ।। दोय गेल मेळा क्यूँ होवे ।।८।।

आंनदब्रम्हधाम जाने का लेसमात्र भी भेद त्रिगुणीमाया के क्रिया-करणीयों में नही रहता फिर जीव त्रिगुणीमायाके ३ लोकसे निकलकर आनंदब्रम्ह के चौथे लोक कैसे पहुँचेगा?जैसे पूर्व दिशा के गाँव में जाने निकला और पूर्वदिशा के रास्ते से पश्चिम दिशा के गाँवो की खोज कर रहा है । यह कैसे मेल खायेगा ? क्योंकी पूरब और पश्चिम दिशा ये दोनो विरुध्द दिशा है । ये आपसमें मिलनेका कभी मेल नही खायेगी । इसीप्रकार जनमने मरनेके चक्करमें रखनेवाली त्रिगुणीमाया,जनमने मरनेके चक्करसे निकालकर महासुखके पदमे ले जानेवाले सतशब्द के साथ मेल नही खायेगी ।।।८।।

ध्रम पुन्न जिग कर हे भारी ।। जन्म धरे भुक्ते संसारी ।।
लोहो कंचन की बेड़ी क्वावे ।। दोनू माय संकट ब्हो पावे ।।९।।

त्रिगुणीमायाके भारी भारी धर्म,पुण्य,यज्ञ करनेसे भी जीव तीन लोकोके परे के सुखके चौथे लोक याने ब्रम्हधाम में नही जाता । वह जीव तीन लोकमे ही जनमता और किये हुये कर्मो के सुख भोगता और साथमे उसी देशके दु:ख भोगता और ये सुख दु:ख खतम् होनेके बाद ८४००००० योनीके ४३२०००० साल तक महादु:ख भोगता । जैसे एक मनुष्य के

हाथ पैरो को लोहे की बेडी लगाई साथमे दुजे मनुष्यके हाथपैरोको कंचनकी बेडी लगाई तो दोनो मनुष्योंको बेडीयोका सरीखा ही दु:ख होगा । लोहेके बेडी का जादा दु:ख होगा और कंचनके बेडीका कम दु:ख होगा ऐसा कभी नही होगा । कंचनके बेडीवालेको लोहेके बेडीके जगह कंचनकी बेडी लगी इस समजका जरासा अधिक सुख भासेगा । इसीप्रकार जीवको त्रिगुणी मायाके ३ लोकमे शुभकर्म और अशुभ कर्मो के ८४००००० योनीके संकटका दु:ख सरीखा पडेगा । सिर्फ शुभकर्म करनेवालेको स्वर्गादिकका जरासा सुख अधिक मिलेगा(भासेगा)। ।।९।।

सुभ ही क्रम असुभ ही कवावे ।। ईण दोनू बिच जक्त बंधावे ।।
देताँ दु:ख लेवताँ सोई ।। भुगत्या बिना न छूटे कोई ।।१०।।

इसप्रकार धर्म,पुण्य,यज्ञ करनेवाले शुभकर्मी तथा विकारी निचकर्म करनेवाले अशुभकर्मी इन दोनो पे ८४००००० योनी में ४३२०००० सालतक अलग अलग योनी में गर्भ में आने का और खपने का सरीखा दु:ख पडेगा । धर्म,पुण्य,यज्ञ करनेवाले शुभकर्मीयो को स्वर्गादिक का अशुभ कर्मीयो से जरासा सुख अधिक मिलेगा । इसप्रकार त्रिगुणीमाया के शुभकर्म और अशुभ कर्म इन दोनो में सभी जगत के लोग अटक गये है । मनुष्य को ये शुभ तथा अशुभ कर्म करते वक्त भी दु:ख है और भोगते वक्त भी दु:ख है । ये दोनो कर्मो से बिना भोगे कोई छुटना चाहे तो भी छुट नही सकता वे कर्म जीव को भोगने से ही छुटते ।।।१०।।

इनकी आस जब लग माई ।। तब लग धाम न पहूचे जाई ।।
सेजाँ रहे माँय हे दूरा ।। नख चख सबे ब्रम्ह का नूरा ।।११।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके सभी भाईयों को कहते है की,जब तक धर्म,

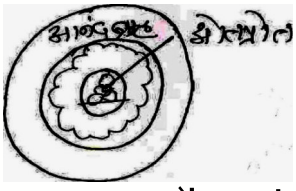

पुण्य,यज्ञ की आशा है तबतक महासुख के आनंदब्रम्ह के धाम को जीव कभी नही पहुँचता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जीव के नखचख में आनंदब्रम्ह का तेज ओतप्रोत भरा है । ऐसा यह सहज में आनंदब्रम्हके धाममे आदि से है फिर भी जीव मन और ५ आत्मा के वश होने से आनंदब्रम्ह धाम से अनंतयुगो से दूर हो गया है ।।।११।।

ब्रम्ह बिना ही आन दिखावे ।। द्रब बिना न गेणो कवावे ।।
अेसो ग्यान ऊपजे माही ।। बिना ब्रम्ह कछु दीसे नाही ।।१२।।

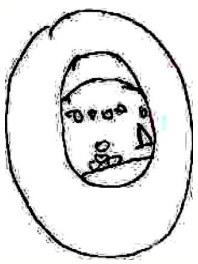

जीवको द्रवके बिना घडा हुवा गहना द्रव के बिना जैसा दिखता वैसा जिसदिन आन याने होनकाल पारब्रम्ह और त्रिगुणीमाया ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ती ये आनंदब्रम्ह सिवा दिखेगे तब आनंदब्रम्ह का ज्ञान जीव के निजमन मे उपजेगा और उसे आनंदब्रम्ह के सिवा त्रिगुणीमाया लेसमात्र भी दिखेगी नही ।।।१२।।

ज्याँ देखे तहाँ ब्रम्ह दिखावे ।। दुतिया भाव मन नही लावे ।।
ने: चळ होय ध्यान जब धारे ।। ब्रम्ह देस मे संत पधारे ।।१३।।

ऐसे जीव को जब जहाँ देखे तहाँ आनंदब्रम्ह दिखेगा,आनंदब्रम्ह के सिवा त्रिगुणीमाया आदि का भाव उसके निजमन में जरासा भी नही उठेगा । ऐसा जब आनंदब्रम्ह मे निश्चल होकर आनंदब्रम्हका जीव ध्यान धारेगा तब वह संत त्रिगुणीमायाके तीन लोकोके परे के आनंदब्रम्ह याने चौथे लोक पधारेगा ।।।१३।।

ब्रम्ह धाम मे अजब तमासा ।। भाषे संत सुणे कौ दासा ।।
ब्रम्ह ग्यान बिन ग्यान अधूरा ।। पुनू बिना चंद्र ज्यूं नूरा ।।१४।।

आनंदब्रम्हके धाममें विष्णूके लोकोमे भी सुख नही है ऐसे अजब सुख है । वे सुख आनंदब्रम्ह में पहुँचे हुये संत जगतमें बखाण करते है तब उस आनंदब्रम्हकी बाणी जो आनंदब्रम्हका खास दास होगा वही ध्यानसे सुनता और आनंदब्रम्ह पहुँचनेकी विधी करता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके लोगो को कहते है की इस आनंदब्रम्ह के ज्ञान के सिवा सभी त्रिगुणीमाया के ज्ञान अधुरे है । जिसप्रकार पुनम के चाँद सिवा सृष्टीका रात का पूरा अंधेरा मिटता नही वैसेही आनंदब्रम्हके ज्ञान सिवा जीवका भ्रमरुपी अंधेरा पूरा मिटता नही । ।।१४।।

सब पर ग्यान ग्यान सो ओई ।। ब्रम्ह ग्यान सम ग्यान न कोई ।।
बाहाळा नदी ब्होत बिध आवे ।। समंद पड़याँ वे नाँव मिटावे ।।१५।।

आनंदब्रम्ह का ज्ञान जगतके सभी ज्ञानके उपर है । सदाके लिये कालसे मुक्त होकर सदा महासुख में पहुँचने के लिये आनंदब्रम्ह के विधी समान जगत में दुजी कोई विधी नही है । जिसप्रकार धरती पे नदी नाले बहुत बहते दिखते । वे सभी नदीनाले सागर मे पड्ते ही उनकी नाम निशाणी मिट जाती ।।।१५।।

चोथे पद मिल्या जन जाई ।। सब त्रिगुण की लेस मिटाई ।।
त्रिगुण जीत गिगन घर कीया ।। म्हा सुन्न पर डेरा दीया ।।१६।।

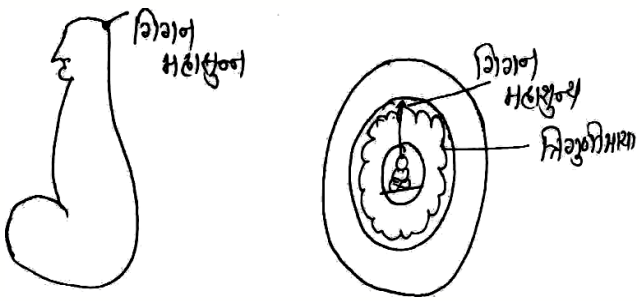

इसीप्रकार जो संत आनंदब्रम्ह के चौथे पद मिल जाता उसकी त्रिगुणी मायावी निशाणी याने कर्म,मन और आत्मा की नाम निशाणी मिट जाती । इसप्रकार मै भी त्रिगुणीमाया को जीतकर गिगन में महाशुन्य में डेरा किया हुँ ।।।१६।।

म्हे हरजन हूं ब्रम्ह बिलासी ।। जग सेती म्हे रहुं उदासी ।।
हेला पाड़ कहुँ जग माही ।। ब्रम्ह ग्यान बिन मुक्ति नाही ।।१७।।

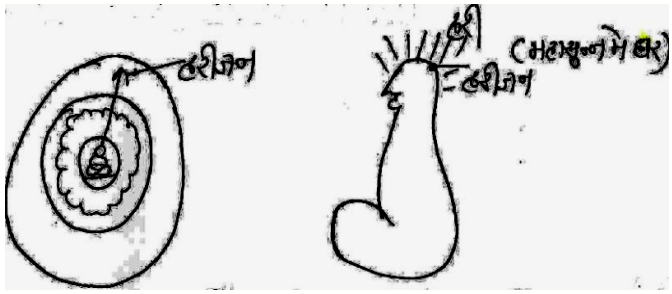

मै हरीजन याने हरीका संत हूँ । आनंदब्रम्हके महासुखका विलासी हूँ । कालके महादु:ख मे पडे हुये जगतके लोगोके लिये बहुत उदासी याने दु:खी रहता हुँ । इस आनंदब्रम्हके ज्ञान सिवा कालके महादु:खसे मुक्ती नही है यह मै जानता हूँ इसलिये सभी जगतके लोगोको भाँती भाँतीसे,जोर देकर,समजा समजाके बताता हूँ ।।।१७।।

बाहिर आण नग्र सब देखे ।। माँय धस्याँ बिन क्या ले पेखे ।।
त्रिगुण करे करावे बारे ।। लागी भूक नीर के सारे ।।१८।।

कोई किसी बडे शहरके बाहर बाहर घुम रहा और उस नगरको बाहरसे देख रहा तो उसे नगर में क्या सुख है यह नगर के अंदर घुसे बगेर कैसे समजेगा? इसीप्रकार ये त्रिगुणीमाया की करणीयाँ है । त्रिगुणीमाया की देहके बाहर की करणीया करने से जो नखचख में ओतप्रोत आनंदब्रम्ह भरा है उसमे क्या महासुख है ये कैसे समजेगा? ये प्रकार तो ऐसा है जैसे जीव को भारी भूख लगी है और जीव वह भूख मिटानेके लिये जलका आसरा लेकर बैठा है । जैसे जल से जीव की भूख कभी नही मिटेगी ऐसेही महासुख की भूख त्रिगुणीमाया के आसरे कभी नही मिटेगी ।।।१८।।

छपन भोजन करे कर लावे ।। जिम्या बिना भूक नही जावे ।।
हेले बिना सुणे नही कोई ।। हेत बिना घर जाय न लोई ।।१९।।

किसीने भूख मिटानेके लिये छप्पन प्रकार के भोजन स्वयम्ने किये या किसीसे करवाये और बना हुवा भोजन ग्रहन किया नही तो भी उसकी भूख नही मिटेगी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है हेला याने हाक देने के बिना कोई सुनता नही ऐसेही मै सतस्वरुप ज्ञानकी हाक जगत में दे रहा हूँ परंतु जगत मे जैसे प्रिती के बिना कोई किसीके घर जाता नही । इसीप्रकार मै सतस्वरुप का महासुखों का हेला जगत मे दे रहा हूँ परंतु यह हेला वोही सुनेगा और सतस्वरुप को धारण करेगा जिसे सतस्वरुप से प्रिती है । जैसे भूख मिटानेके लिये छप्पन प्रकारके भोजन किये और जिमा नही तो भूख नही मिटती । वैसेही मै सतस्वरुप का ज्ञान जगतमें देता परंतु जिसे सतस्वरुप की चाहना होगी वो ही सतस्वरुप का ज्ञान सुनके धारण करेगा । और उसके ही घट मे साई प्रगट होगा और उसकी महासुखों की भूख सदा के लिये मिट जायेगी । और जो धारण नहीं करेगा वो त्रिगुणीमाया के सुख दु:ख में ही अटका रहेगा । ।।१९।।

जळ मे बेस पेस कोई आवे ।। पीयाँ बिना प्यास नही जावे ।।
अंतर मिल्याँ बिना नाही माने ।। केती बात कहे कोई छाने ।।२०।।

जैसे कोई प्यासा मनुष्य प्यास मिटाने के लिये मिठे जलसागर मे जाकर रातदिन बैठता

और वह जल कभी पिता नही तो उसकी प्यास कभी मिटती नही । इसप्रकार अजरलोक के संतोके सतसंगत मे जीव बैठता,ज्ञान सुनता परंतु जीव अपने अंतरसे याने निजमन से वह ज्ञान ग्रहन करता नही तो उसके हंस को सतगुरु ने कितनी भी बाते छान छान कर याने खोल खेलकर उसे समजे ऐसी बताई तो भी वह मानेगा नही । ऐसे जीव को संत भी कितनी छान छानकर उसे समजे ऐसी बाते बतायेगे? ।।२०।।

इस बिध क्रिया सबे करावे ।। घट बिन भेद जळण नही जावे ।।
आतम माँय बिराजे रामा ।। तन कूं सोज सरे सब कामा ।।२१।।

देह के बाहर की त्रिगुणीमाया की करणीया सभी ज्ञानी,ध्यानी जगत से कराते परंतु घट के अंदर के आनंदब्रम्ह के भेद सिवा आतमा मे जो होनकाल पारब्रम्हसे मुक्त करनेवाला रामजी बिराजमान है वह कैसे प्राप्त होगा? आवागमन से मुक्त होनेका काम तनमे रामजी खोजकर प्रगट करोगे तो ही पुरा होगा ।।।२१।।

सूर्ज स्हेंस ऊदे होय आवे ।। घट मे रेण तिमर नही जावे ।।
अेक लख चंद सेंस लख सूरा ।। तिण मध बास रहे नही दूरा ।।२२।।

जैसे बडा सुखो से भरा हुवा भवन है और वह पुरी तरह चारो ओरसे एक सुरज की किरण नही जायेगी ऐसा पेकबंद किया है जिसकारण मकान मे पुरा अंधेरा छाया है । ऐसा भवन हजारो सुरज उगे है इसके बिचमे है फिर भी उस मकान के अंदर का अंधेरा जरासा भी नही जाता । ऐसे मकान के बाहर हजार सुरज तो क्या लाखो सुरज और चाँद उग गये तो भी भवन के अंदर का अंधेरा जरासा भी नही मिटेगा । इसीप्रकार जीव के घट के मायारुपी भ्रम का अंधेरा है । जीव के घट के बाहर का रातदिन हजारो प्रकार नही लाखो प्रकार का ज्ञान दिया तो भी जीव के घट में आनंदब्रम्ह का ज्ञान प्रकाश नही होगा । ।।२२।।

अेता उदे हुवा तो काँई ।। तन बिन भेद उजाळो नाँई ।।
सतगुरू मिले भेद जब पावे ।। असंख सूर माही दिखलावे ।।२३।।

जीवको आनंदब्रम्हके सतगुरुसे आनंदब्रम्हका भेद मिलेगा तो असंख्य प्रकार का आनंदब्रम्ह का ज्ञान जीव को जीव के घट मे ही दिखलायेगे ।।।२३।।

ज्यूं दर्पण मे आप दिखाया ।। सत्तगुर भेद ब्रम्ह यूं पाया ।।
तीन लोक काया मे क्वावे ।। सत्तगुर भेव लखण मे आवे ।।२४।।

जैसे आयनेमे मनुष्य जैसेके वैसा स्वयम्को देखता वैसेही सतगुरुसे आनंदब्रम्हका भेद मिलने पे जो घटमे नखचखमे ओतप्रोत आनंदब्रम्ह है वह जैसे के वैसा दिखता तथा जीव जो तीन लोक चौदह भवन बाहर देखता वे ही ३/१४ भवन जैसेके वैसे सतगुरुसे भेद मिलनेपे घटमे ही लखनेमे आते ।।।२४।।

घट मध भेव ब्रम्ह भरपूरा ।। सत्तगुर भेद प्रसिया नूरा ।।
म्हे हरजन होय जग मे आया ।। हंसा कूँ क्हे ग्यान सुणाया ।।२५।।

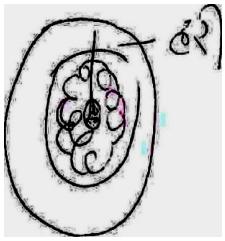

मैने सतगुरुके घटमे भेद से घटमे ओतप्रोत भरे हुये आनंदब्रम्ह का तेज जाना । इसलिये मै हरीका संत होकर हंसोको आनंदब्रम्हका ज्ञान सुनाने के लिये होनकाल जगतमे आया हूँ । इसलिये जगतके सभी हंसो मै जो बता रहा हूँ वह आनंदब्रम्ह की बाणी निजमन से सभी सुनो ।।।२५।।

हंसा सुणो हमारी बाणी ।। तन मन भेद कहुँ सब सब आणी ।।
अम्रापुर सूं में चल आया ।। तुम कारण मुज ब्रम्ह पठाया ।।२६।।

मै तुम्हे तन,मन,त्रिगुणीमाया,होनकाल पारब्रम्ह तथा आनंदब्रम्ह का पुरा भेद भाँती भाँती से बतावूँगा । मै अमरापूर से चल आया हूँ और मुझे आनंदब्रम्ह ने तुम हंसो के लिये होनकाल जगत मे भेजा है ।।।२६।।

मो कूँ लखो ग्यान कर सोई ।। ऊट बेट क्या मेरी होई ।।
बोली सबे बात सब ठाणो ।। क्रणारत सूँ मोय पिछाणो ।। २७ ।।

मुझे सतज्ञानके न्यायसे लखो । मेरी उठ-बेठ अमरापूर की है या होनकाल की है यह देखो । मेरी बोली तथा सभी बाते अमरापूर की है या नही यह ध्यान में लावो । मेरी करनारथ याने मेरा हर काज त्रिगुणीमाया के परे के अमरलोक का है या नही यह लखो । ।।२७।।

अजपे संग राम लिव लागी ।। रेणी ध्यान भ्रम भिन्न भागी ।।
राम नाम मेरे इधकारा ।। अजर लोक अेनाण बिचारा ।।२८।।

मेरा अजपेके संग याने तन और मनसे जपे नही जाता ऐसे सतशब्दके आधारसे रामजीके साथ लीव लगी है । मेरा रहना रामजीके साथ है । मेरा ध्यान रामजी मे है । मेरे सभी अलग-अलग होनकाली भ्रम भाग गये । मेरे प्राण से भी मेरे लिये मेरे रामजी अधिक है ये सभी अजरलोक के चिन्ह है या त्रिगुणीमाया के चेन है इसका सभी बिचार करो ।।।२८।।

अे अेनाण देखिये सोई ।। निस दिन बात ब्रम्ह की होई ।।
म्हे बी ब्रम्ह ब्रम्ह कूँ गाऊँ ।। ब्रम्ह ब्रम्ह कूँ क्हे समझाऊँ ।।२९।।

ये चिन देखो की मै रातदिन सिर्फ आनंदब्रम्ह की ही बात करता हूँ या नही । मै भी ब्रम्ह हूँ और सतशब्द ब्रम्हको गाता हूँ और तुम भी मेरे सरीखे ब्रम्ह हो इसलिये आनंद ब्रम्हका ज्ञान समजाता हूँ ।।।२९।।

ज्यूं गजराज गज समझायो ।। अपनो बळ ले तुर्त बतायो ।।
संगत गधाँ भूलग्यो आपो ।। गज मत छाड गधा मत थापो ।।३०।।

और तुम भी ब्रम्ह हो,वह मैं तुम्हे बतलाता हूँ(समझाता हूँ ।)जिस तरहसे एक हाथीने,दूसरे हाथीको समझाया,जिस तरहसे अपना बल उस हाथीने,उस दूसरे हाथी को

तुरन्त दिखाया ।(जैसे एक हाथीका बच्चा,एक कुम्हारने लाकर,अपने गधों के बीचमें छोड़ दिया । वह हाथी का बच्चा गधोंमे रहने लगा । और गधीका दूध भी पीने लगा । तथा उन गधोंमें,गधे जैसा खाना-पीना,सभी करते हुए रहने लगा । उस हाथीको लोग गधा हाथी बोलते थे)और वह भी उस गधोंकी संगतीसे,अपना हाथीपन भूलकर,उसने अपना हाथीका मत छोड़कर,(उस गधे के मत के जैसा),गधे का मन धारण कर लिया । ।।३०।।

पटक्या गधा कुंभार स माऱ्यो ।। तब आपो गजराज संभाऱ्यो ।।
जब वो जाय बंध्यो द्रबाराँ ।। खान पान उत्तम सब चारा ।।३१।।

(कुम्हार भी उस हाथी पर मिट्टी खोदकर लाता था और मिट्टी के बर्तन भी बेचने के लिए ले जाता था । और चरने को भी गधे के बीच छोड़ता था । इस तरहसे उसे गधा हाथी कहता था । और वह हाथी भी स्वयं को गधा हाथी समझता था । एक दिन राजा का हाथी उधर आया और उन गधों में देखा,तो एक हाथी उन गधोंमें दिखाई दिया । वह राजा का हाथी उस हाथी को समझानेके लिए,उन गधों की तरफ जाने लगा । उस राजा के हाथी को देखकर सभी गधे भागने लगे । उन गधों को भागता देखकर,वह गधा हाथी भी भागने लगा । तब वह राजा का हाथी,उस गधा हाथी से बोला,अरे तुम क्यो भागते हो?गधा हाथी बोला,मुझे तुमसे भय लगता है । मुझे छोड़ो,जाने दो । तब राजा का हाथी बोला,तुम कौन हो?तब गधा हाथी बोला,मैं गधा हाथी हूँ । तब राजा का हाथी बोला,की हाथी कही,गधा हाथी होता है क्या?तुम इन गधों में रहकर,गधों की संगती से हाथीपन भूल गया है । तुम मेरे जैसा ही हाथी हो । चल, तुम्हे मैं तुम्हारा स्वरूप दिखाता हूँ । ऐसा कहकर,उस हाथी को तालाब के किनारे ले गया और बोला, अब मेरा स्वरूप देखो,तब वह गधा हाथी,अपना प्रतिबिम्ब देखकर बोला,कि तुम और मैं एक जैसे ही है । परन्तु तुम हाथी हो और मैं गधों कि संगती से गधा हो गया हूँ । मैं गधों में रहूंगा नही,परन्तु अब कैसे करूं,वह बताओं?तब राजा के हाथी ने उसे बताया,की सूंड से गधा पकड़कर फेकना और कुम्हार पासमें आया,तो उसे भी सूंड से पकड़कर फेकनेकी कला दिखा दी),तब वह हाथी कुम्हारके घर जाकर,कुम्हार के गधे सूंड में पकड़कर फेकने लगा ।(ऐसा उस हाथी को बिगड़ा हुआ देखकर,वह कुम्हार भी उसके पास आया),तब कुम्हार को भी उस हाथीने,सूंड में पकड़कर फेक दिया । (तब वह कुम्हार उस हाथीको बिगड़ा हुआ जानकर,उस हाथीको भगा दिया),तब वह हाथी अपने को समझने लगा,कि मैं गधा नही हूँ , हाथी हूँ । ऐसा स्वयं के बारे में विचार किया ।(और कुम्हार बोला,यह हाथी बिगड़ गया है । यह मेरे गधे और मुझको मार डालेगा । ऐसा कहकर,उस हाथी को गधों में से भगा दिया । तब यह हाथी,राजा के हाथी के पास आया और बताया,की गधों को और कुम्हार को फेकने की वजह से,उस कुम्हार ने मुझे भगा दिया । फिर वह हाथी,उस हाथी को राजा के पास ले गया ।)फिर उस दूसरे हाथी को भी,राजा अपने यहाँ बांधकर,उसे

खाना पीना और चारा डालने लगा । ।।३१।।

युँ हंसा कूं क्हे समझाऊं ।। अपनो सरूप ज माय दिखाऊं ।।
तुम तो ब्रम्ह ओर नही कोई ।। आपो भूल रहया यूं सोई ।।३२।।

इसीप्रकार हंसोको तुम अमर जीवब्रम्ह हो,तुम मरनेवाली मन,५ आत्मा तथा त्रिगुणीमाया नही हो यह समजाता हूँ और उसको उसका असली ब्रम्हस्वरुप कैसे है यह ज्ञान से दिखलाता हूँ। तुम मन और ५ आत्मा इस मायाके कारण त्रिगुणीमायाके चक्करमे आये हो और मै अमरब्रम्ह नही हूँ ,मै माया हूँ ऐसा समजकर बैठे हो और अपना ब्रम्हपन भूल बैठे हो। यह सतज्ञानसे समजो की मन,५आत्मा और त्रिगुणीमाया मरती और तुम मरते नही। इसका अर्थ तुम मरनेवाली माया नही हो तुम अमरब्रम्ह हो इसके सिवा तुम दुजे कुछ नही हो ।।।३२।।

देस देस का हंसा आवे ।। न्यारी बोली बेष सुणावे ।।
अजर लोक का बायक न्यारा ।। बिर्ळा लखे सब्द संसारा ।।३३।।

इस मृत्युलोक में अलग–अलग ऐसे ३५ देश से हंस आते और वे जिस देश से आये उस देश की भाषा आकर यहाँ आने पे सुनाते । ऐसा ही मै अजरलोक से आया हूँ । मेरी भाषा होनकालके अन्य ३५ लोकोसे न्यारी है । होनकालके ३५ लोकोकी भाषा कालके दु:खमें रखने की है और मेरी भाषा काल के दु:ख से निकालकर अजरलोक के महासुख में जाने की है । ऐसी अन्य सभी से न्यारी है । होनकालके हररोज के उठ बैठ के भाषासे मेरी भाषा न्यारी है इसलिये मेरी भाषा संसार का बिरला ही हंस समजता ।।।३३।।

दु:भास्यो नर जब चल आवे ।। आप समझ ओरां समझावे ।।
अमर लोक की बेठक अेसी ।। हले न चले न डोले नही तेसी ।।३४।।

जैसे जगत में कोई मनुष्य एक देश से दुजे देश मे आता और वहाँ जाने पे उस भाषा नही समजती तब दुभाषा याने दोनो देश की भाषा जाननेवाला उसे क्या कहना है यह पहले स्वयम् समजता और दुजो को वह क्या कह रहा यह समजाता। इसीप्रकार मै भी अमरलोक और होनकाल का दुभाष्या हूँ । मै पहले होनकाल के दु:ख में था और बाद मे अमरलोक के महासुख में गया। इसकारण मुझे होनकाल की दु:ख की और अमरलोक के सुख की दोनो भाषा अवगत है। यह दोनो भाषा समजती इसलिये जिसे होनकाल के दु:ख से निकलना है और अजरलोक के महासुख में जाना है उन्हें मै अजरलोक की भाषा समजाता हूँ । जब संत देह के अंदर बंकनाल के रास्ते से अमरलोक पहुँचता तब उसका देह हिलता नही,चलता नही, डोलता नही ।।।३४।।

देही बधे चडे आकासा ।। उथले नेण सुन्न घर बासा ।।
त्राटक बंध लगे जब सोई ।। नाभी पवन झीण सो होई ।।३५।।

उसका देह जो छ फूट का था वह आकाश तक बढता । उसके नेन उलटे फिर कर सुन्न

घर मे स्थिर होते । उसे त्रिगुटी में त्राटक बंध लगता तब उसका नाभी से धारोधार चलनेवाला सांस झिना हो जाता ।।।३५।।

रेचक पूरक कुंभक ध्यानी ।। अजर लोक की आ सेनाणी ।।
बेठा हले चले नई कोई ।। मुख दे चुपक बात नही होई ।।३६।।

उसे रेचक(बाहर की सांस),पूरक(अंदर की सांस)याने सांसो में धारोधार भजन करनेसे नाभी मे अमाऊ कुंभक ध्यान लगता जिसमे उसकी पांच आत्मा हंस से सदा के लिये अलग हो जाती और सिर्फ हंस बंकनालसे अजरलोक के रास्ते चल पड्ता । हंसका पांचो आत्मासे बिछड्ना होना यह चिनं याने ही अजरलोक पाने की निशाणी है ।।।३६।।

म्हा सुन्न मे जाय समावे ।। उद बुद बात केण नही आवे ।।
बस्तु बानगी ले कोई आया ।। युं हरजन ने बेण सुणाया ।।३७।।

जब हरीजन त्रिगुणीमायाके परे महाशुन्यमें पहुँचता तब उसके देहको हिलने की,चलने की

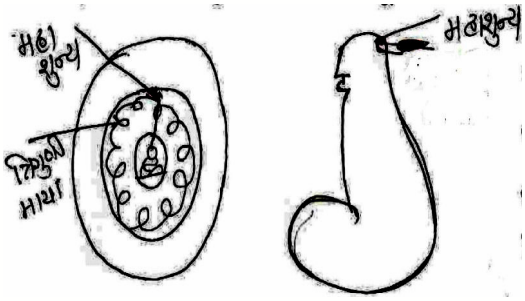

कोई सुद नही रहती और उसे उसके मुखसे कोई बात नही करते आती यहाँ तक की रामशब्द भी उच्चारते नही आता ऐसी अदभूत बात बनती जो जगतको शब्दोसे समजाते नही आती । जैसे–अनाजके बेपारी बडे गोडाऊनसे खरेदी करनेवालेको अनाजका जरासा नमुना बताते है । ऐसेही मै भी अजरलोक में पहूँचे हुये हरीजन का जरासा नमुना बताया हूँ ।।।३७।।

ध्यान बंध के चेन दिखावे ।। बूठा मेहे सुबावळ आवे ।।
बिरखा सुख कहो क्या होई ।। सीखत ग्यान सबे सुख ओई ।।३८।।

जैसे राजस्थान मे बडी कडी धूप रहती और जीव कडी धूप के कारण त्रायमान त्रायमान करता ऐसे वक्त कभी बारीश आ जाती और जीव को बारीश से निपजे हुये थंडी का सुख मिलता और यह सुख जीव लेता परंतु कैसा सुख था यह जगत को शब्दो मे वर्णन नही कर सकता इसीप्रकार अजरलोक का वैराग्य विज्ञान ज्ञान पाने पे हंस को होता । मतलब अजरलोक का ध्यान बंध लगने पे होता ।।।३८।।

अम्र लोक सूं म्हे चल आऊं ।। झूट साच को न्याव चुकाऊँ ।।
प्रम भक्त बिन मुक्त न होई ।। धाम भजन बिन जाय न कोई ।।३९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मै अमरलोक से चलकर आया हूँ इसकारण त्रिगुणीमाया कैसे झूठी है और आनंदब्रम्ह कैसे सच्चा है इसका फरक सतज्ञान के न्यायसे जगत को समज देता हूँ । आनंदब्रम्ह के परमभक्ती सिवा अन्य त्रिगुणीमाया के किसी भक्ती से कालसे मुक्ती नही है और कालके परेके महासुखके धाम में आनंदब्रम्ह के भजन बिना जाते आता नही ।।।३९।।

हेला पाड़ कहुँ जग माही ।। बिना राम कहुँ मुक्ति नाही ।।
कर आचार उत्तम घर जावे ।। ध्रम जिग इंद्र लोक सिधावे ।।४०।।

मै जगतको राम बिना कालसे मुक्ती नही यह ज्ञानके आवाज लगाके समजाता हूँ । त्रिगुणीमाया के उत्तम आचार कर मनुष्य अगले जनम मे उत्तम घर जनमता,परंतु कालसे मुक्त होता नही । धर्म और यज्ञ करनेसे हंस इंद्र बनता परंतु आवागमनसे मुक्त होता नही ।।।४०।।

तीन लोक मे भुक्ते सोई ।। सुभ सो क्रम असुभ संग होई ।।
ब्हो प्रकार करे नर कोई ।। करम भजन बिन गळे न लोई ।।४१।।

चार वेद के सभी शुभ कर्म किये तो भी चौथा लोक मिलता नही । उसे ये कर्म काल के तीन लोक मे ही भोगने पड्ते । शुभ कर्म के साथ अशुभ कर्म बनते ही बनते । जिसकारण ४३२००००साल के लिये ८४०००००योनी में दु:ख भोगते फिरना पड्ता । ऐसे सभी कर्म रामजी का भजन किये सिवा गलते नही ।।।४१।।

सोगी मेल द्रब कूँ गाळे ।। अंतर भजन क्रम सब जाळे ।।
घर में लाय लगे जब सोई ।। डोरा डसी रहे नही कोई ।।४२।।

जैसे सोने को गलाने के लिये सोने में सोगी डालने की जरुरत पड्ती इसीप्रकार सभी कर्म जलाने के लिये देह के बाहर की मायावी क्रिया काम में नही आती,हंस के देह के अंदर का रामजी का भजन काम में आता । जैसे घर में आग लगती और वह आग सभी डोरा रस्सी जला देती वैसेही हंस के अंतर का भजन सभी कर्म खाक कर देता ।।।४२।।

बन दूं देत कोई जाई ।। घर कूँ ताव न पहूँचे आई ।।
बाहेर क्रिया क्रम न धूजे ।। हाताँ किल्लो मोर्चा जुँझे ।।४३।।

किसीने बनको आग लगाई और सोच बैठा की यह आग घरमे की सभी डोरा से लेकर रस्सी तक जला देगी तो यह उसकी सोच झूठी है। कारण बनके आग से घर को जरासा भी ताव पहूँचता नही फिर घर के अंदर की चिजे वह बनकी आग कैसे जलायेंगी? इसीप्रकार माया की बाहर की क्रिया देह के अंदर के कर्म नही जलाती। जैसे किसी राजा का शत्रू राजा किल्ले मे है और उसे उस राजा का विनाश करना है। उसके हाथ में किल्ला भी है परंतु वह राजा का विनाश करने के लिये लढाई किल्ले के बाहर बाहर ही कर रहा है,किल्ले के अंदर धस नही रहा तो किल्ले अंदर बैठा हुवा शत्रू राजा का विनाश होगा क्या? राजा का विनाश होगा यह बात सही है क्या? ।।४३।।

तब लग माँय धसे नही कोई ।। जब लग बांत सही नही होई ।।
मन क्रमा को राजा कवावे ।। बाहेर भटक हात नही आवे ।।४४।।

इसीप्रकार मन कर्मो का राजा है । इस कर्मोके कारण जीव को बारबार आवगमनके दु:खमें आना पड्ता । ऐसा कर्मोका राजा जो आदि से हंससे पक्का जुडा है वह घटके बाहर

त्रिगुणीमाया के कर्मो में भटकर उसका नाश करने को हाथ में आयेगा क्या? ।।४४।।

सर्प बास बँबी में होई ।। बाहेर कुटयाँ मरे न कोई ।।
मन कूँ बांध सुरत कूँ धारे ।। सब्द लठ ले माँय पसारे ।।४५।।

साप बांभी(एक प्रकारका बिल)में बैठा है। उस बांबीके बाहर बाहर बांभीको कितना भी कुटा, पिटा तो साप कभी नही मरेगा। साप बांभीके छिद्र(छेद)में जहाँ बैठा है उसमे लठ डाल के कुटोगे तो साप तुरंत मर जायेगा। इसीप्रकार मनको देहके बाहर की त्रिगुणी माया की क्रिया करनेसे कभी नही मार सकते। उस मनको त्रिगुणी मायामें जानेसे रोककर उसपे सुरत से ध्यान रखकर रामशब्द को रटन का लठ चलाया तो वह मन त्रिगुटी में सहज मर जाता ।।४५।

सासो सास धँवे तब मांही ।। युँ मन सरप मारीयो जाई ।।
प्रम पद प्रमात्म देवा ।। रटियाँ बिना मिले न भेवा ।।४६।।

सांसोसांस रामनाम का धवन करने से यह मन सरप त्रिगुटी में मर जाने से हंस को परमात्मा देवके परमपद में पहुँचने का भेद याने रास्ता खुलता । यह परमपद पहुँचने के रास्ते का भेद रामनाम धारोधार रटने सिवा और किसी क्रिया करणीसे नही मिलता ।४६।

नौद्या भक्त जक्त मे जाणे ।। प्रम भक्त कूं साध पिछाणे ।।
नौद्या भक्त करे कोऊ भारी ।। बिस्न लोक को हुवे इधकारी ।।४७।।

सभी जगत विष्णू की नौद्या भक्ती जानते परंतु परमात्मा की परमभक्ती नही जानते । कोई बिरला ही साधू परमात्मा की परमभक्ती पहचानता । ये जगत मे कुछ लोक नौद्या भक्ती भारी करते और विष्णू लोक के अधिकारी बनते ।।।४७।।

सिव ब्रम्हा सो सक्त क्रावे ।। इंन कूँ लोप कबु नही जावे ।।
जब लग काळ न पहूंचे आई ।। बस बेकुंट प्रम सुख पाई ।। ४८ ।।

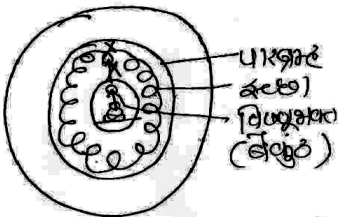

इतने कष्टसे विष्णूकी भक्ती किये हुये ये विष्णूके भक्त शिवब्रम्ह और शक्ती याने पारब्रम्ह और इच्छामाया को कभी नही लोपते । ये विष्णूके भक्त बैकुंठ में विष्णू का प्रलय करनेके लिये काल नही पहुँचता तब तक बैकुंठ में माया के परमसुख भोगते बैठे रहते।४८।

जब वो काळ बिसन कूं ढयावें ।। चाकर धणी गर्भ मे आवे ।।
उथल पुथल याँ तीना कीया ।। जीव ब्रम्ह का बेंछर लीया ।।४९।।

जब वह काल विष्णूका तथा बैकुंठका प्रलय करता तब विष्णूकी चाकरी करके बैकुंठमें पहुँचे हुये ऐसे सभी चाकर प्रलयमें जाते और मालिक विष्णूके साथ गर्भमें आते। ब्रम्हा, विष्णू,महादेव इन तिन्होंने जीवो को मायाके सुखो में उलटा सुलटा भर्माकर माया में लगा दिया और आनंदब्रम्ह याने परमात्मा के जीव आपस में बाँट लिये ।।।४९।।

चाय बड़ाई सब मे होई ।। साची बात कहे नही कोई ।।

चाय व्हाँ लग निरपख नाही ।। पख खाँच कर बात सुणाही ।।५०।।

चाय बडाई सबमें होती। इसकारण सत्य बात कोई कहता नही। जबतक चाय बडाई है तब तक चाय बडाई चाहनेवाले की बात निरपक्ष नही रहती। वह चायबडाईवाला सत्य निरपक्ष बात छोड्के झूठे का पक्ष खिंचखिंचकर सुनाता। इसीप्रकार मायावी ब्रम्हा,विष्णू,महादेव को चाय बडाई है इसकारण वे झूठी माया का पक्ष खिचखिचकर सुनाते है और सत्य साहेब की बात जरासा भी नही बताते।।।५०।।

निरपख ब्रम्ह पखो नही राखे ।। केवळ ब्रम्ह सत्त कर भाखे ।।
केवळ ब्रम्ह बिना सब बाणी ।। पखे पखे बोल्या सब आणी ।।५१।।

जिसको मायाकी चाय बडाई नही तथा सत्य निरपक्ष ब्रम्ह जो सबमे ओतप्रोत है उसको पाया है ऐसे सतगुरु सत्य साईके सिवा झूठे माया का जरासा भी पक्ष नही लेते और केवल ब्रम्ह आदि से अंततक कैसा सत्य है,अमर है,मायाके परे का सुख देनेवाला है यह सत्य बात भाखते है । ऐसे केवलब्रम्ह सतगुरुके सिवा सभी संतोने झूठे मायाका पक्ष ला-लाकर बाणीया बोली है ।।।५१।।

बात कहे कोई ग्यान सुणावे ।। केवळ बिना पखे सब लावे ।।
केवळ उरे करम हे लारे ।। जब लग कहे पखे नई सारे ।।५२।।

केवलब्रम्ह के सिवा कोई बात कहता या ज्ञान सुनाता वह केवलब्रम्ह के सिवा त्रिगुणीमाया का ही पक्ष लाता। केवलब्रम्ह के ज्ञान के पहली ओर के सभी ज्ञान मे कर्म जीव के पिछे लगने की विधी है। जबतक जीव को कर्म काटने के सिवा लगने की विधी सुनाते है तबतक किसी ने भी बोला हुवा ज्ञान माया के पक्ष है ।।।५२।।

कुछ क्रमा की रेस रहावे ।। पखे बात आवे सो आवे ।।
थोडो घणो पखो जोई होई ।। निरपख भक्त न होवे कोई ।।५३।।

जब तक मायाके क्रियाकर्म की रेस मात्र भी विधी बताते तब तक मायाके पक्ष की बात आती ही आती । ज्ञान मे जरासा भी माया का पक्ष रहा तो वह भक्ती निरपक्ष ब्रम्ह याने सतगुरु की नही होती ।।।५३।।

भजन भक्त सिष भाव कुँ चावे ।। अे सुख पखे बिना नही आवे ।।
पण बिण भक्त न होवे कोई ।। घट बिन बोल बचन नही होई ।।५४।।

अपना शिष्य बनना चाहिये,अपनी भक्ती करनी चाहिये,अपना भजन करना चाहिये यह सुख मनको माया के पक्ष बिना आता नही । मायाका पद रहेगा तो ही माया का भक्त बनेगा । जैसे माया के घट सिवा बोल बचन नही होते ।।।५४।।

निर्पख ब्रम्ह पखो नही कोई ।। मून पकड़ नही निर्पख होई ।।
मन मत बंध गरीबी धारे ।। निर्पख नही वो मत्त बिचारे ।।५५।।

निरपक्ष ब्रम्ह याने सतगुरु जिसका हंस सतब्रम्ह के वश है,मन के वश नही है उस में कोई

पक्ष नही रहता । किसीने मौन धारण कर लिया मतलब निरपक्ष हुवा ऐसा नही समजना । उसके हंस ब्रम्ह की मन माया से मुक्ती हुई नही,उसके मन ने माया ही धारण की परंतु वह उसके माया पक्ष की बात किसीको बोलना नही चाह रहा । कोई मन के मत से गरीबी धारण किया मतलब उसने निरपक्ष ज्ञान धारण किया ऐसे नही । उसने मनके मत से गरीबी यह माया धारण किया । जो मन इस माया के मत से स्वयम् को बांधके क्रिया कर्म करता वह निरपक्ष नही । मन इस माया के पक्ष का है ।।।५५।।

मत्त मे बंधे करेजे काँई ।। निर्पख नही मत्त के माँई ।।
आदर गरीबी समता सोई ।। तीनू लछ मत्त का होई ।।५६।।

जैसे कोई गरीबी धारण करता वैसेही किसीने आदर या समता धारण की । आदर या समता धारण करना यह मन माया का मत है यह निरपक्ष ब्रम्ह का मत नही है । अजरब्रम्ह का मत नही है ।।।५६।।

ग्यानी सूं म्हे मत्त बखाणू ।। मत्त से ध्यान बंदगी ठाणू ।।
ध्यान सिरे मन धीरज आवे ।। माहि उलट ब्रम्ह जब पावे ।।५७।।

इन सभी ज्ञानीयो से मै मेरा अजरब्रम्ह का मत बताता हूँ। मै अजरब्रम्ह के मत से अजरब्रम्ह की ध्यान बंदगी करता हूँ। यह ध्यान बंदगी होनकाल पारब्रम्ह के ध्यान बंदगी में श्रेष्ठ होने कारण मेरे निजमन को काल से मुक्त होऊँगा यह धिरज आता और मेरा हंस देह मे बकंनाल के रास्ते से उलटकर अजरब्रम्ह पाता ।।।५७।।

गिर्वर सूं हंस उतरे सोई ।। संख नाळ के गेले होई ।।
बंक नाळ होय उलट सिधावे ।। कंवळ छेद घर मेर समावे ।।५८।।

यह हंस गिरवर से याने भृगुटी संखनाल रास्ते से माँ के गर्भ में आकर जगत में आया । मेरे अजर मतज्ञान विज्ञान से ये हंस देहमें बकंनाल का कवल छेदन करके बकंनाल से उलटकर मेरु कमल में समाता ।।।५८।।

उँलंग्यो हंस गिगन घर लीया ।। भँवर गुफा मे आसण कीया ।।
त्रूगुटी माहे अनाहद गाजे ।। अनंत कोट ज्हाँ बाजा बाजे ।।५९।।

यह मेरु कमल उलघंके जिस भृगुटी गिगन से सृष्टी मे माया देह धारण किया उस गिगन में जाकर भँवर गुफा याने त्रिगुटी में आसन करता । वहाँ त्रिगुटी में पहुँचने के बाद अनहद गर्जना सुनाई देती और वहाँ अनंत कोट बाजे बाजते ।।।५९।।

इम्रत झरे पिवे जन सोई ।। वाँ जन पी मतवाळा होई ।।
बाणी कहे छेहे नही आवे ।। पार ब्रम्ह का भेव बतावे ।।६०।।

वहाँ त्रिगुटी मे अमृत झरता। वह अमृत पी–पीकर हंस मदोन्मत्त याने अजरब्रम्ह का मतवाला होता। ऐसे अजरब्रम्ह के मदोन्मत्त मे हंस अजरब्रम्ह की बाणी अंत नही आयेगी ऐसी जगत में बोलता और होनकाल पारब्रम्ह के परे के अजर पारब्रम्ह मे पहुँचने का भेद

जगत को बताता । ।।६०।।

त्रूगुटी चड़े अगम घर सुझे ।। सूरा संत रात दिन जुझे ।।
आगे धस्या समंद मे सोई ।। सब्दाँ अरथ ओर नही कोई ।।६१।।

त्रिगुटी चढा हुवा शुरवीर संत शुरविरता से होनकाल पारब्रम्ह के साथ जुंझता तब उसे होनकाल पारब्रम्ह के परे का अजर पारब्रम्ह का अगम घर सुजता। आगे अगम घर में पहुँचने पे सतशब्द ही सतशब्द समजता। इस सतशब्दमें होनकाल पारब्रम्ह जरासा भी नही दिखता । ।।६१।।

जळ मे पेस क्हा कोई भाखे ।। जळ बंब ब्रम्ह प्रकास्यो आखे ।।
जब लग नीर तीर लग जावे ।। तब लग ठाम केण मे आवे ।।६२।।

जैसे कोई मनुष्य समुद्र मे मधोमध(बीच मे)धस कर बैठ गया तो उसे चारो ओर जल ही जल दिखता । जबतक समुद्र मे पुरा डूबता नही ऐसे तिर पे था तबतक उसे वह कहाँ पे है यह जगह कहते आती थी । इसीप्रकार हंस जब तक त्रिगुटी में था तब तक वह धाम बता सकता था । जब हंस अजरब्रम्हके अगम सागरमें पहुँचता तब उसे चारो ओर आनंदब्रम्ह का प्रकाश ही प्रकाश दिखता त्रिगुटीतक मायावी होनकाल की कुछ ना कुछ छटा दिखती परंतु त्रिगुटी के आगे अगम पहुँचने पे मायावी होनकाल पारब्रम्ह की कही जरासी छटा भी नही दिखती । इसकारण अगम घर पहुँचा हुवा संत जो सभी मे ओतप्रोत भरा है ऐसा आनंदब्रम्ह ही आनंदब्रम्ह बताता, माया की जरासी भी बात नही बताता । ।।६२।।

सब सोध स्या नीर के माही ।। नीर ही नीर ओर कुछ नाही ।।
ब्रम्ह धाम का भेव बताया ।। दसवे द्वार ब्रम्ह बर पाया ।।६३।।

जैसे कोई समुद्रके जलमे मधोमध जाकर पुरा डूब जाता तब उसे जल ही जल दिखता । जल के सिवा और कुछ नही दिखता । इसीप्रकार संत को आनंद ब्रम्हधाम मे होता । ब्रम्ह ही ब्रम्ह चारो ओर दिखता यह भेद याने निशानी ब्रम्ह धाम पहुँचने की है । ऐसे आनंदब्रम्ह धाममे, दसवेद्वारमे पहुँचनेके बाद ही आत्मा को अपना ब्रम्ह पती मिलता ।।।६३।।

दसवे द्वार केवळी होई ।। क्रम कसर रहे नही कोई ।।
कटीया क्रम भ्रम सब भागा ।। दसमो द्वार केवळी जागा ।।६४।।

ऐसा हंसके दसवेद्वार के पहुँच के बाद उसमे संचित कर्म तथा क्रियेमान कर्म बनानेवाला मन और ५ आत्मा यह कसर रहती नही । उसके सभी कर्म तथा कर्म बनाने के उपाय और कर्म मे डालनेवाले सभी भ्रम कट जाते और वह जहाँ माया पहुँचती नही,काल पहुँचता नही ऐसे दसवेद्वार मे केवली जगह पाता ।।।६४।।

केवळ कसर रहे क्यूं मांही ।। चोथे जुग अग्या हर नाही ।।
मन की सुते सबे नही जावे ।। या कसर केवळ नही आवे ।।६५।।

ऐसे केवली जगह मे बकंनाल के रास्ते से उलटनेवाले केवलीयो मे मन और ५ आत्मा यह कसर रहती नही । यह कसर मन के सुदबुद से जानेवाले केवलीयो मे रहती । इसलिये सुदबुद से जानेवाले जैन चौथे युग में हर की आज्ञा न होने कारण दसवेद्वार में,केवल में नही जाते ऐसा कहते ।।।६५।।

सिव जु आपि सत जुग सारे ।। ओ देहे पड़े जलम वा धारे ।।
कळ जुग संत अेक भवतारी ।। खेत्र बदे मोख इधकारी ।।६६।।

कुछ संत सोहम जाप अजपा जपके मन,५ आत्मा और संचित कर्मो के साथ दसवेद्वार में जहाँ मायावी पारब्रम्ह केवलपद है उस में पहुँचते और वह शरीर पड्ने पे वह मृत्युलोक में गर्भ मे आकर जनम धारण करते । कलजुग में विदेह क्षेत्र याने भरत खंड में एक ही भव में मोक्ष मे पहुँचाने के अधिकार का भवतारी संत प्रगटता और अनंतो को एक ही भव में अजरलोक के महासुख में पहुँचाता । ।।६६।।

भगवंत समो सदा वा बिसी ।। सत्त जुग त्रेता द्वापर जी सी ।।
केवळ होय न केवळ होई ।। फेर जलम नही धारे कोई ।।६७।।

ऐसे तो २० भगवंत जिसप्रकार सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग मे रहते ऐसे कलियुग मे भी रहते । इनसे एक ही भव में परममोक्ष नही जाते आता । किसी प्रकार से केवल प्राप्त करके केवली हुवा तो भी वह जब तक निकेवल नही होता मतलब मन,५ आत्मा तथा सभी कर्मो से मुक्त नही होता तबतक वह होनकालमें जन्म धारण करता । जब केवल होकर निकेवल होता फिर वह कभी गर्भ में आकर मायावी शरीर धारण नही करता ।।।६७।।

केवळ मिले न केवळ माही ।। तब हे ब्रम्ह ओर कुछ नाही ।।
माया जलम धरे सो आई ।। भुला कहे ब्रम्ह हे भाई ।।६८।।

ऐसा केवली संत निकेवल होकर निकेवल मे मिलता तब वह मन,५ आत्मा तथा कर्मो से मुक्त ऐसा ब्रम्ह बनता । वह कोरे ब्रम्ह के सिवा कुछ नही रहता । जिसके साथ मन,५ आत्मा और संचित कर्म यह माया है ऐसा हंस माँ के पेट में आकर गर्भ धारण करता और ऐसे मायावी हंस को माया मे भुले हुये पंडीत,ज्ञानी मायामुक्त शुध्द केवल ब्रम्ह कहते ।।।६८।।

धरी देहे अवतार क्हावे ।। केवळ ब्रम्ह कुख नही आवे ।।
धरीये कूँ पूजे पुजावे ।। पूरण ब्रम्ह कछु नही पावे ।।६९।।

ऐसे गर्भ से जन्म के शरीर धारण किये हुये हंसो को सतस्वरुप ब्रम्ह अवतार कहते । और ऐसे गर्भसे शरीर धारण किये हुये को स्वयम् पुजते और जगतसे पुजाते और पुरण ब्रम्ह याने सतस्वरुप ब्रम्ह पाने की आशा करते परंतु ऐसे पुजनेवालो को पुरणब्रम्ह कभी नही मिलता । (क्योंकी केवल ब्रम्ह कभी गर्भ में नही आता)(केवली संत सतगुरु ही गर्भ मे नही आते तो वह ब्रम्ह कैसे आयेगा । क्योंकी गर्भ मे आनेवाली माया ५ आत्मा,मन,कर्म

उनके साथ नही रहती ।)।।६९।।

धंधो करे जक्त के माही ।। केवळ पंथ सिरपे बेहे जाई ।।
झूटी बात साच नही होई ।। माया ब्रम्ह फेर कहुँ ओई ।।७०।।

यह मायाका कर्म धंदा जगत मे रातदिन करते इसलिये इनको पुरणब्रम्ह का ज्ञान सिर के परे वह जाता याने समजके परे रहता । माया और पुरणब्रम्ह ये दो आदि से है । इसमे माया झूठी है,नश्वर है,काल के मुख में पूरीतरह से बैठी है और पुरणब्रम्ह सत्य है,अमर है,काल के परे है और महासुख का दाता है यह तुम्हे फिर से बताता हूँ ।।।७०।।

करत बात दोनू दिखलावे ।। साची रहे झूट सब जावे ।।
ने: चे ब्रम्ह झूट हे माया ।। यूं धरी देहे औतार कवाया ।।७१।।

जो संत अजरलोक से आये वही दोनो बाते याने गर्भ से धारणा किये हुये अवतार माया कैसे है याने कालसे मुक्त करने के लिये झूठे है और अजरलोक से आये हुये सतगुरु कैसे निश्चल है,केवलब्रम्ह है,काल से मुक्त करने के लिये सत्य है यह बताते ।।।७१।।

झूट पकड़ जूझे नर कोई ।। ने: चे हार जीत नही होई ।।
कण बिन आण फूस कूं कूटे ।। नागे कूं क्या नागा लूटे ।।७२।।

ऐसे माँ के उदर से जन्मे हुये अवतारो को केवलब्रम्ह याने काल से मुक्त करानेवाला ब्रम्ह पकड्कर कालसे मुक्त होने के लिये जुंझता उसकी निश्चित ही हार होती,कभी भी काल से मुक्त होने की जीत नही होती । इन अवतारो के भरोसे काल से मुक्त होने की आशा रखना याने बिना अनाज के फुसको कुटना और उसमे से भूख निवारा होगा ऐसे अनाज के दाने की आशा करना ऐसा है । नागा याने धनहिन मनुष्य धन के लिये नागे को लुटता । ऐसे नागे से लुटनेवाले नागे को क्या धन मिलेगा? इसीप्रकार जीव के साथ मन,५ आत्मा और संचित कर्म है । यही मन,५ आत्मा और संचित कर्म अवतारो के साथ है । ऐसे अवतारोको पुजने से जीव का मन,५ आत्मा और संचित कर्म ये मिटेगे(और सतशब्द प्रगट होगा)ऐसा सोचना याने नागा नागे कू लुटने समान है ।।।७२।।

त्रिया पुरष बिना होय नारी ।। हेत प्रीत सूं रमे पियारी ।।
ब्होत बरस दिन भेळा होई ।। दोयाँ सूं नही तीजो कोई ।।७३।।

जैसे कोई नारी पुरुष के साथ न रमते दुजे बराबरी के नारी के साथ सालो गिनती हेतप्रित से रमती। ऐसे नारी को दुजे नारी से सालो गिनती प्रिती से रमने के बाद भी तीजा याने बालक नही होता। इसीप्रकार जीवमाया(मन+संचितकर्म)अवतार माया(मन+संचितकर्म)को युगोतक भी पुजता रहा तो भी उसे माया के परे का अजरब्रम्ह नही मिलेगा ।।।७३।।

गारो कीच लग्यो आय अंगा ।। पाणी बिना न होवे चंगा ।।
नौद्या जन्म मरण हे लारे ।। निर्गुण बिना कहो कूण उबारे ।।७४।।

जैसे मनुष्य के शरीर को गारा लगा और वह मनुष्य उस गारे को पाणी के सिवा गारे से साफ करना चाहता तो वह शरीर गारे से कितना भी साफ कीया तो भी वह शरीर गारा किचड से साफ नही होगा इसीप्रकार जीव माया अवतार मायाके नौद्या भक्ती करके कालके दु:खमे डालनेवाले मन,५ आत्मा और कर्म माया को निकालना चाहेगा तो उसकी मन,५ आत्मा और कर्म यह माया कभी नही निकलेगी । इसकारण जीवके पिछेका जन्मना मरणा कभी नही छुटत। सतगुरु का शरणा लेनेसे जीव का मन,५ आत्मा और संचितकर्म सदाके लीये छुट जाते और यह छुटते ही जीवका जन्मने मरने का फंद छुट जाता ।।७४।।

गुण सो मिले गुणा मे जाई ।। निर्गुण ब्रम्ह आप हे भाई ।।
निर्गुण भक्त भेव नही आवे ।। सुर्गुण सुर्गुण सब ही गावे ।।७५।।

अवतारो की भक्ती करना याने सतोगुण की भक्ती करना है। इस भक्तीसे हंस त्रिगुणीमाया के सतोगुणमे मिलता और निरगुण केवलब्रम्हमे कभी नही मिलता। सतगुरुके बिना निरगुणका याने अजरलोक का भेद नही आता। इसलिये यह भेद सभी काजी,पंडीत, ज्ञानी,ध्यानी नही जानते। इसलिये सरगुण,सरगुण यह काल के मुख मे बैठी हुई माया को पुजते और पुजाते ।

काजी पिंडत मर्म न जाणे ।। सत्तगुर बिना क्हो कूण पिछाणे ।।

इस बात का काजी और पंडीत ये मर्म(भेद)तो जानते नही। यह बात सतगुरू के बिना कौन पहचानेगा? ।।७५।।

दोहा ।।

तीन लोक चहूँ चख सूं ।। हे ऊँचा अे वास ।।
गुर सरणे सुखराम के ।। हंस करे जाय बास ।।७६।।

ये आनंदलोकका वास तीन लाक चौदह भवन,चार पुरी तथा तीन ब्रम्ह के तेरह लोकोके परे उँचा है। केवलब्रम्ह का सतगुरु मिलने पे हंस उस देश में जाकर वास करता ।।।७६।।

अमर लोक सुखराम केहे ।। या बिध सूं हंस जाय ।।
साचा सत्तगुर सिर धरे ।। रहे राम लिव लाय ।।७७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी काजी,पंडीत,जगत के लोगो को कहते है की ऐसे अजरलोक के सच्चे सतगुरु का शरणा सिर पे धारण करके रामजी से लिव लगाना तब हंस काल से मुक्त ऐसे अजरलोक के महासुख में पहुँचता ।।।७७।।

।। इति अजर लोक ग्रंथ संपूरण ।।